दैनिक भास्कर

गुरुवार, 26 जुलाई 2012

मिशन से मुनाफे की ओर बढ़ रहा मीडिया: चोपड़ा

» हिंदी विवि के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र में विशेष व्याख्यान

ब्यूरो | वर्धा.

पत्रकारिता मिशन से परमिशन और परमिशन से कमीशन पर आ गया है। मीडिया और मुनाफे के बीच मिशन सैंडविच हो गया है। उक्त कथन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन केंद्र के प्रभारी समन्वयक एवं स्वतंत्र पत्रकार धनंजय चोपड़ा ने कहे। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में आयोजित व्याख्यान माला में मीडिया छात्रों को भविष्य में मीडिया की चुनौतियों एवं कामयाब पत्रकार बनने के नुस्खों के बारे में जानकारी दे रहे थे। मीडिया में बरती जाने वाली सावधानियों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए चोपडा ने बताया कि एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए व्यक्ति में सामाजिक अध्ययन, भाषा पर पकड, कल्पना शक्ति और विश्लेषण क्षमता का होना आवश्यक है। महात्मा गांधी को सर्वश्रेष्ठ सेचारक बताते हुए उन्होंने कहा कि सबसे बड़े जनसमूह को संदेशित करने वाले गांधी की तरह एक अच्छे पत्रकार में समाज को जानने की समझ का होना जरूरी है। आजादी पूर्व से अब तक बदलती पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मीडिया में मिशन को ध्यान में रख कर काम करें और समाज के सरोकारों व मीडिया के बाजारवाद के बीच सामंजस्य बनाएं रखे। जब तक आप समाज को बेहतर ढंग से नहीं समझेंगे तब तक आप एक अच्छे पत्रकार की जिम्मेदारियों का निर्वहन नहीं कर सकते। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल के राय अंकित ने कहा कि मीडिया में रोजगर की अपार संभावनाएं है। बशर्ते छात्रों को उत्साह और मेहनत से काम करने की जरूरत है। आभार केंद्र के सहायक प्रो. राजेश लेहकपुरे ने किया।

दैनिक भास्कर
शुक्रवार, 27 जुलाई 2012

हिंदी विवि में चीनी व क्रोएशिया के छात्रों का स्वागत

ब्यूरो | वर्धा.

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में चीन के दो विश्वविद्यालयों से दस-दस तथा क्रोएशिया से आयी छात्रा का विवि के भाषा विद्यापीठ में कुलपति विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में स्वागत किया गया। इस अवसर पर प्रतिकुलपति तथा विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो.ए. अरविंदाक्षन, भाषा विद्यापीठ के प्रो. उमाशंकर उपाध्या, प्रो. विजय कौल, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित अशोक वाजपेयी, प्रो. सुरेश शर्मा, प्रो. राम शरण जोशी, प्रो. बी.एम. मुखर्जी, डा. जगदीश दोंगी,प्रो. के.के. सिंह, डा.हरीष हुनगुंद आदि प्रमुखता से उपस्थित थे। विश्वविद्यालय में आगमन पर छात्र-छात्राओं का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि चीन और भारत महान सभ्यता वाले देश है । दोनों देश आर्थिक दृष्टि से बड़ी तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। चीन से आए छात्रों के प्रति प्रसन्नता जाहिर करते हुए कुलपति राय ने कहा कि आप लोग इन दोनों सभ्यताओं और भावी महाशक्तियों के देशों को जोड़ने का काम करेंगे तथा यहां से हिंदी सीखकर सांस्कृतिक दूत बनकर अपने देश जाएंगे। इस अवसर पर प्रो. उमाशंकर उपाध्याय तथा प्रो. विजय कौल ने भी छात्रों का स्वागत किया। प्रारंभ में सभी छात्र-छात्राओं का गुलाब पुष्प से स्वागत किया गया। समारोह का संचालन डा. अनिल दुबे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल पाण्डेय ने किया।

मराठी भाषा से अभिभूत हुई क्रोएशिया की वेलेंटिना

जिला प्रतिनिधि | वर्धा.

स्थानीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि में अध्ययनरत क्रोएशिया की वेलेंटिना बेदी मराठी भाषा से काफी अभिभूत हुई। 6 भाषाओं में पारंगत वेलेंटिना अब मराठी भाषा सीख रही है।

क्रोएशिया देश की जाग्रेब राजधानी शहर सेफैकल्टी ऑफ ह्युमेनिटीज एण्ड सोशल साइंस केंद्र से इंडियोलॉजी एण्ड क्रोएटिस्टिक्स विभाग से बीए कर रही वेलेंटिना बेदी को मराठी भाषा सीखने की काफी इच्छा है। फिलहाल वेलेंटिना इंग्लिश, जर्मन, इटालियन, संस्कृत, पाली व सर्बियन भाषा में पारंगत है। 22 वर्षीय वेलेंटिना ने अभी तक इटली, झेक रिपब्लिक, ग्रीक, आस्ट्रेलिया देश का दौर करते हुए भाषा, साहित्य व संस्कृति का अध्ययन किया है महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि में मराठी भाषा में डिप्लोम

अभ्यासक्रम से 1 माह में मराठी बोलना, लिखना व पढ़ना आ जाएगा ऐसा उसका विश्वास है ।

हिंदी विवि में कैप्टन डा. सहगल को श्रद्धांजलि

जिला प्रतिनिधि.वर्धा.

कैप्टन डा. लक्ष्मी सहगल के निधन पर उनकी याद में तथा उनको श्रद्धांजलि देने के लिए एक कार्यक्रम स्त्री अध्ययन विभाग में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विवि के अध्यापकगण तथा कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित थे। डा. लक्ष्मी सहगल को याद करते हुए विभाग के अध्यक्ष डा. शंभु गुप्त ने कहा कि कैप्टन लक्ष्मी सहगल नेताजी सुभाषचंद्र बोस की अभिन्न सहकर्मी तथा आजाद हिंद फौज की प्रथम महिला सैन्य टुकडी रानी झांसी रेजीमेंट की नेतृ थीं।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारत में गणमान्य महिला स्वतंत्रता सेनानी मानी जाती है। कैप्टन लक्ष्मी सहगल का जाना भारत की आजादी केआंदोलन की बुजुर्ग पीढ़ी की अंतिम कड़ियों का टूट जाना है। इतिहास में कैप्टन लक्ष्मी सहगल का स्थान सुरक्षित है तथा आने वाली पीढ़ियां विशेषतः स्त्रियां उनसे राष्ट्रीयता की प्रेरणा लेती रहेगी। पूरा देश उनका ऋणी है। कार्यक्रम में विभाग के सहायक प्रोफेसर शरद जायस्वाल ने डा. सहगल के जीवन एंव कार्य का परिचय दिया। इस मौके पर अहिंसा एंव शांति अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डा.नृपेंद्रप्रसाद मोदी भी उपस्थित थे।

Vidarbha Line
The Hitavada
EXCLUSIVE FOR THE READERS IN VIDARBHA
July 28, 2012

MGIHU welcomes China Croatia students

■ District Correspondent
WARDHA, July 27

MAHATMA Gandhi International Hindi University (MGIHU) recently welcomed 11 students from China and Croatia, who have come to learn Hindi.

In 2007, Mahatma Gandhi International Hindi University designed a one-year course for international students. More than 300 students have studied Hindi language from the Bhasa Vidyapeeth of this university. This is the third batch of the course.

Total 10 students are from China while one from Croatia. Bian Huiyuan, from Beijing Foreign Studies University, Beijing said, "I would like to know about Indian Culture. Without knowing Hindi, it would have been difficult. Therefore, I am studying Hindi here."

Another student, Chen Ziyu, from XI'AN International Studies University, China, said, "Economic relations between both countries are improving so we need to know Hindi for better opportunities".

Valentina Bedi has come from Croatia to learn Marathi language is very interesting. She has already studied German, Italian, Sanskrit & English.

At the welcome ceremony, Vibhuti Narayan Rai VC (vice chancellor) of Mahatma Gandhi International Hindi University said, "China and India are recognized for their ancient and great civilizations. The students will act as a good ambassdors to bridge the gap bnetween two countries," he added.

प्रतिदिन अखबार
बुधवार, 25 जुलाई, 2012

भारतीय संस्कृति के पोषक साहित्यकार थे रामकुमार वर्मा

हिंदी विश्वविद्यालय में राजलक्ष्मी वर्मा ने साझा किए विचार

प्रतिनिधि, 24 जुलाई

वर्धा- सुविख्यात साहित्यकार पद्मभूषण प्रो. रामकुमार वर्मा भारतीय संस्कृति के पोषक साहित्यकार थे. भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता उनके जीवन का प्रमुख स्वर रहा. भारतीय मूल्य तथा आदर्शों के वे पुरोधा थे.

कबीर और तुलसीदास का समन्वित प्रभाव उनके साहित्य पर था. उक्त बातें प्रो. रामकुमार वर्मा की पुत्री प्रो. राजलक्ष्मी वर्मा ने महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ मे अध्यापकों एवं छात्रों के समक्ष अपने पिता से जुड़ी स्मृतियों को साझा करते हुए कही.प्रो. रामकुमार वर्मा द्वारा लिखी गई कृतियां तथा उनके पुस्तकों के संग्रह को प्रो. राजलक्ष्मी वर्मा विश्वविद्यालय को प्रदान करने वाली हैं. इस उपलक्ष्य में साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल की पहल पर प्रो. वर्मा के साहित्य पर गुरूवार को एक चर्चा का आयोजन किया गया था. इस अवसर पर अपने पिता से जुड़ी यादें तथा उनके साहित्य के बारे में बताते हुए राजलक्ष्मी वर्मा ने उनके 67 वर्ष के साहित्यिक जीवन का इतिहास उपस्थितों के सामने रखा.

वर्धा : *प्रा. वर्मा लिखित किताबों की प्रदर्शनी निहारते छात्र व प्राध्यापक.*

उन्होंने कहा कि 1904 में जन्मे रामकुमार वर्मा का सागर, गोपालगंज, नरसिंहपुर, इलाहाबाद तथा महाराष्ट्र के रामटेक से गहरा संबंध रहा. अनेक पुरस्कारों तथा सम्मानों के धनी वर्मा की अंग्रेजी, हिंदी तथा मराठी पर अच्छी पकड़ तो थी ही, अन्य भाषाओं के भी वे अच्छे जानकार थे.

वे आलोचक, निबंधकार, कवि, नाट्यलेखक के रूप में मशहूर तो थे ही, एक सफल पहलवान के रूप में भी उनका दबदबा था. उन्होंने 134 एकांकियां लिखीं. उन्होंने कहा कि हिंदी में जब दलित साहित्य की चर्चा शुरू हुई तब प्रो. रामकुमार वर्मा ने 1963 में एकलव्य लिखा और एकलव्य को ही नायक के रूप में प्रस्तुत कर तत्कालीन व्यवस्था की विसंगतियों को दर्शाने का साहस भरा कार्य किया. यही कारण है कि कामायनी और उर्वशी के बाद एकलव्य का हिंदी साहित्य जगत में अहम स्थान माना जाता है. प्रो. राजलक्ष्मी वर्मा ने बताया कि उनके पिता जितने अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे उतने ही बालसुलभ. उन्हें सिनेमा का बड़ा शौक था और वे सपरिवार सिनेमा देखने जाया करते थे. जीवन के प्रत्येक क्षण का आनंद उठाने वर्मा सही मायने में 'रोमांटिक' पुरुष थे. उन्होंने भारत भ्रमण के साथ-साथ इंग्लैंड, अमेरिका, रशिया, श्रीलंका तथा नेपाल आदि देशों में भी पठन-पाठन का कार्य किया. संत कबीर पर 1930 में 'कबीर का रहस्यवाद' लिखा और अपनी आयु के 25 वें वर्ष में ही उन्होंने अपनी पहचान बनाई. 'रेशमी टाई' नाटक लिखकर उन्होंने नई ऊँचाई हासिल की. वे कर्मकांड, छुआछूत और जातिप्रथा के खिलाफ थे. वे सेवानिवृत्ति के 20 वर्ष बाद भी व्यस्त रहे और जीवन के अंतिम समय यानी 5 अक्तूबर 1990 तक लिखते रहे. प्रो. राजलक्ष्मी वर्मा ने बड़े भावुक होकर कहा कि 40 वर्ष से भी अधिक समय तक पिताजी का साथ मिला और इस दरमियान उन्होंने मुझे अपने पैरों पर खड़ा कर आत्मनिर्भर बनाया.

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को उनका साहित्य प्रदान करने में बड़ी प्रसन्नता होगी और आशा व्यक्त की कि इस विश्वविद्यालय में वर्माजी के नाटकों के विविध पहलुओं पर शोध हो.

इस अवसर पर साहित्य विद्यापीठ के प्रो. सूरज पालीवाल, प्रो. रामवीर सिंह, प्रो. के.के. सिंह, डा. रामानुज अस्थाना, डा. अशोकनाथ त्रिपाठी, डा. उमेशकुमार सिंह, डा. प्रीति सागर, डा. वीरपाल यादव, डा. सुनील कुमार, डा. रुपेश सिंह, अरुणेश शुक्ल सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

प्रतिदिन अखबार
गुरुवार, 26 जुलाई 2012

चीनी व क्रोएशिया के छात्रों का आगमन

प्रतिनिधि, 24 जुलाई

वर्धा - महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में चीन के दो विश्वविद्यालयों से दस-दस तथा क्रोएशिया से आयी छात्राओं का विवि के भाषा विद्यापीठ कुलपति विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में भव्य स्वागत किया गया. प्रतिकुलपति तथा विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. ए. अरविंदाक्षण, भाषा विद्यापीठ के प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. विजय कौल, विशेष अतिथि के रुप में उपस्थित अशोक वाजपेयी, प्रो. सुरेश शर्मा, प्रो. राम शरण जोशी, प्रो. बी.एम. मुखर्जी, डा. जगदीश दागी, प्रा. के.के. सिंह, डा. हरीष हुनगुंद आदि प्रमुखता से उपस्थित थे.

विवि में आगमन पर छात्र-छात्राओं का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए कुलपति डा.राय ने कहा कि चीन और भारत महान सभ्यता वाले देश हैं और दोनों देश आर्थिक दृष्टि से बडी तेज गति से आगे बढने वाले देश हैं. चीन से आए छात्रों के प्रति प्रसन्नता जाहिर करते हुए कुलपति राय ने कहा कि आप लोग इन दोनों सभ्यताओं और भावी महाशक्तियों के देशों को जोडने का काम करेंगे तथा यहां से हिंदी सीखकर सांस्कृतिक दूत बनकर अपने देश जाएंगे.

प्रो. ए. अरविंदाक्षण ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले समय में हिंदी सीखने हेतु अन्य देशों से भी छात्र-छात्राएं आने वाले हैं. प्रो. उमाशंकर उपाध्याय तथा प्रो. विजय कौल ने भी छात्रों के स्वागत में उदबोधन दिए. प्रारंभ में सभी छात्र-छात्राओं का गुलाब पुष्प से स्वागत किया गया. संचालन डा. अनिल दुबे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल पाण्डेय ने किया. कार्यक्रम में छात्र-छात्राएं बडी संख्या में उपस्थित थे.

हिंदी विवि में वृक्षारोपण अभियान

प्रतिनिधी, 25 जुलाई

वर्धा - महात्मागांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में स्टाफ क्लब एवं पर्यावरण क्लब के संयुक्त सहयोग से वृक्षारोपण अभियान का आरंभ किया गया. कुलपति विभुती नारायण राय ने वृक्ष लगाकर औपचारिक शुरुवात की. इस अवसर पर डा. ओ.पी. गुप्ता, डा. दिलीप गुप्ता, मुरलिधर बेलखोडे, प्रा. सुरज पालिवाल, नरेंद्र सिंह, पी. सरदार सिंह, डा. अनवर सिद्दीकी, उमेशकुमार सिंह, बि.एस. निरगे, राजेश अरोडा, विनय भुषण आदी उपस्थित थे.

मिशन से मुनाफे की ओर बढ़ रहा है मीडिया : धनंजय चोपड़ा

हिंदी विवि के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र में विशेष व्याख्यान

रवि लाखे, 25 जुलाई

वर्धा- पत्रकारिता मिशन से परमिशन और परमिशन से कमिशन पर आ गया है. मीडिया और मुनाफे के बीच मिशन 'सैंडविच' हो गया है. उक्त प्रतिपादन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन केंद्र के प्रभारी समन्वयक एवं स्वतंत्र पत्रकार धनंजय चोपडा ने किया.

वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में आयोजित व्याख्यानमाला में मीडिया छात्रों को भविष्य में मीडिया की चुनौतियों एवं कामयाब पत्रकार बनने के नुस्खों के बारे में जानकारी दे रहे थे.

मीडिया में बरती जाने वाली सावधानियों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए चोपड़ा ने बताया कि एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए व्यक्ति में सामाजिक अध्ययन, भाषा पर पकड़, कल्पना शक्ति और विश्लेषण क्षमता का होना आवश्यक है. महात्मा गांधी को सर्वश्रेष्ठ संचारक बताते हुए उन्होंने कहा कि सबसे बड़े जनसमूह को संदेशित करने वाले गांधी की तरह एक अच्छे पत्रकार में समाज को जानने की समझ का होना जरुरी है. आजादी पूर्व से अब तक बदलती पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मीडिया में मिशन को ध्यान में रख कर काम करें और समाज के सरोकारों व मीडिया के बाजारवाद के बीच सामंजस्य बनाए रखें. पत्रकारिता में मिशन को छोड़ने का मतलब पत्रकारिता का मर जाना है. जब तक आप समाज को बेहतर ढंग से नहीं समझेंगे तक तक आप एक अच्छे पत्रकार की जिम्मेदारियों का निर्वहन नहीं कर सकते. उन्होंने पत्रकारिता में अपने अनुभव के आधार पर लोगों को समझाने की कला से छात्रों को अवगत कराया और कहा कि अखबार, किताब और टेलीविजन ही आपके स्कूल हैं, इसके साथ पत्रकारिता के छात्रों को मीडिया में बदलती तकनीकी ज्ञान होना भी जरुरी है. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल के. राय 'अंकित' ने कहा कि मीडिया में रोजगार की अपार संभावनाएं है. बशर्ते छात्रों को उत्साह, लगन और मेहनत से काम करने की जरुरत है.

कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन केंद्र के सहायक प्रो. राजेश लेहकपुरे ने किया. इस अवसर पर केंद्र के प्रो. डा. अख्तर आलम, सहायक प्रो. राजेश लेहकपुरे ने किया. केंद्र के प्रो. डा. अख्तर आलम, सहायक प्रो. संदीप कुमार वर्मा और रेणु सिंह सहित मीडिया के विभिन्न पाठ्यक्रमों के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

www.esakal.com

सकाळ

गुरुवार, २६ जुलै २०१२

चीनचे दहा विद्यार्थी गिरवतील हिंदीचे धडे

हिंदी विश्वविद्यालयात प्रवेशित : क्रोएशियाची मुलगी शिकेल मराठी

सकाळ वृत्तसेवा

वर्धा, ता. २५ : शैक्षणिक आदान-प्रदानाकरिता येथील महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात चीनमधील १० विद्यार्थी हिंदी, तर क्रोएशिया येथील एक विद्यार्थिनी मराठी भाषेचे धडे गिरविण्यास दाखल झाले आहेत. हे सर्व विद्यार्थी एक वर्षाच्या हिंदी पदविका अभ्यासक्रम करतील. नवी दिल्ली येथील भारतीय संस्कृती संबंध परिषदेमार्फत आलेल्या या विद्यार्थ्यांचे उत्स्फूर्तपणे स्वागत करण्यात आले. पान ३ वर

वर्धा : हिंदी विश्वविद्यालयात शैक्षणिक आदान-प्रदान धोरणानुसार एक वर्षाचा अभ्यासक्रम पूर्ण करण्यास आलेले चीन आणि क्रोएशिया येथील विद्यार्थी.

चीनचे दहा विद्यार्थी गिरवतील हिंदीचे धडे

स्वागत समारंभाच्या अध्यक्षस्थानी हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू विभूती नारायण राय होते. प्र-कुलगुरू तथा विदेशी शिक्षण विभागाचे अध्यक्ष प्रा. ए. अरविंदाक्षन, भाषा विद्यापीठाचे प्रा. उमाशंकर उपाध्याय, प्रा. विजय कौल, अशोक वाजपेयी, प्रा. सुरेश शर्मा, प्रा. राम शरण जोशी, बी. एम. मुखर्जी, डॉ. जगदीश दॉगी, प्रा. के. के. सिंह, डॉ. हरीश हुनगुंद यांची प्रमुख उपस्थिती होती.

विश्वविद्यालयातील आगमनानिमित्त या विद्यार्थ्यांचे खुल्या दिलाने स्वागत करीत कुलगुरू राय म्हणाले, महान सभ्यता आणि संस्कृतीकरिता भारत आणि चीनची ओळख आहे. दोन्ही देश आर्थिक विकासात गतीने पुढे जात आहेत. चीनमधून आलेले विद्यार्थी या दोन संस्कृती आणि उदयास येऊ घातलेल्या महाशक्तींना जोडण्याचे भविष्यात काम कराल, अशी अपेक्षा व्यक्त केली. सोबतच या विश्वविद्यालयातून हिंदी भाषेला आत्मसात करीत सांस्कृतिक दूत बनून आपल्या देशात परताल, असा विश्वास व्यक्त केला. याप्रसंगी प्र-कुलगुरू प्रा. अरविंदाक्षन म्हणाले, विश्वविद्यालयात येत्या काळामध्ये विविध देशांतील विद्यार्थी येणार आहेत. यावेळी प्रा. उमाशंकर उपाध्याय, प्रा. विजय कौल यांनी मनोगत व्यक्त केले. प्रारंभी विद्यार्थ्यांचे गुलाब पुष्प देऊन स्वागत केले. संचालन डॉ. अनिल दुबे यांनी केले. भाषा तंत्रज्ञान विभागाचे अध्यक्ष प्रा. अनिल पांडेय यांनी आभार मानले.

लोकमत
शुक्रवार
दि. २७ जुलै २०१२

हिंदी शिकण्याकरिता चीन व क्रोएशियाच्या विद्यार्थ्यांचे आगमन

हिंदी विद्यापीठात ११ विदेशी विद्यार्थी दाखल

वर्धा | दि. २६ (शहर प्रतिनिधी)

महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात चीन आणि क्रोएशिया येथून आलेल्या अकरा विद्यार्थ्यांचे स्वागत कुलगुरू विभूती नारायण रॉय यांच्या अध्यक्षतेखाली करण्यात आले. या वेळी स्वागत कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते.

कार्यक्रमाला प्र-कुलगुरू प्रो.ए. अरविंदाक्षण, प्रा.उमाशंकर उपाध्याय, प्रो. विजय कौल, अशोक बाजपेयी, प्रा.सुरेश शर्मा, प्रा. रामशरण जोशी, प्रा.बी.एम. मुखर्जी, डॉ. जगदीश दाँगी, प्रा. के.के. सिंग, डॉ. हरिश हुनगुंद प्रामुख्याने उपस्थित होते.

हिंदी भाषा शिकण्यासाठी आलेल्या विद्यार्थ्यांचे स्वागत करताना कुलगुरु विभूती नारायण राय म्हणाले की, भारत आणि चीन हे दोन देश महान सभ्यता असणारे देश आहेत. उभय देश आर्थिकदृष्टया झपाट्याने विकसित होणारे देश आहेत.

चीनच्या विद्यार्थ्यांना उद्देशून ते म्हणाले की या महान सभ्यता आणि भावी महाशक्तीच्या देशांना जोडण्याचे काम आपल्याकडून व्हावे आणि हिंदी शिकून सांस्कृतिक दूताचे काम तुमच्या हातून व्हावे अशी शुभेच्छा. प्रो. ए. अरविंदाक्षण, प्रो. उपाध्याय, प्रो. विजय कौल यांनीही संबोधित केले. सर्व विद्यार्थ्यांचे गुलाबपुष्प देऊन स्वागत करण्यात आले.

कार्यक्रमाचे संचालन डॉ. अनिल दुबे यांनी केले तर आभार प्रो.अनिल पांडे यांनी मानले.

लोकमत समाचार
गुरुवार, 26 जुलाई 2012

छात्र-निरीक्षण | दिल्ली विश्वविद्यालय के ज्ञानोदय एक्सप्रेस अभियान के छात्रों एवं शिक्षकों की भेंट

गांधीवादी विचार बने मानव जीवन का लक्ष्य

वर्धा। 25 जुलाई (लोस)

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय को दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्राओं एवं शिक्षकों ने भेंट दी. इस दौरान ज्ञानोदय एक्सप्रेस अभियान के तहत छात्राओं ने विश्वविद्यालय के विविध शैक्षणिक परिसर का भ्रमण किया. इस दल में दिल्ली विश्वविद्यालय के 35 महाविद्यालयों की 886 छात्राएं एवं करीब 65 शिक्षक शामिल थे.

इस अवसर पर गांधी हिल्स परिसर में आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की कर्मस्थली में स्थापित इस विश्वविद्यालय ने अपने छोटे से स्वरूप के बावजूद उल्लेखनीय कार्य करने का संकल्प लिया है. स्वतंत्रता संग्राम में यह शहर आजादी की लड़ाई का प्रमुख विचार- विनिमय केंद्र रहा है.

हिंदी वि.वि. के गांधी हिल्स परिसर में उपस्थित दिल्ली वि.वि. की छात्राएं.

इस लिहाज से विश्वविद्यालय में शांति एवं अहिंसा के अलावा स्त्री अध्ययन के जैसे पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है. इसके अलावा बेहतरीन सुविधाओं वाले संचार एवं जनसंवाद पाठ्यक्रम को भी नए रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. इस विश्वविद्यालय से अध्ययन कर निकलने वाले छात्र देश ही नही विदेशों में भी अपनी प्रतिभा के जौहर दिखाएंगे. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की ओर से दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. सत्यप्रकाश दुबे तथा परमिंदर कौर समेत छात्र एवं छात्राओं का स्वागत चरखा, सूत की माला तथा पुष्पगुच्छ प्रदान कर किया गया.

समारोह का संचालन विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन केंद्र के प्रभारी डॉ. सुरजीत सिंह ने किया तथा कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे ने आभार माना.

इस छात्रों एवं शिक्षकों के दल ने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर, पुस्तकालय एवं अन्य स्थलों का निरीक्षण किया. इसके बाद इस दल ने सेवाग्राम आश्रम में पहुंचकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को आदरांजलि अर्पित की. वही पवनार में आचार्य विनोबा भावे के ब्रम्हविद्या आश्रम में भी जाकर इस दल ने निरीक्षण किया.

THE TIMES OF INDIA
THE TIMES OF INDIA, NAGPUR
THURSDAY, JULY 26, 2012

WARDHA DIGEST

Foreign students learning Indian languages at MGIHU

Wardha: Mahatma Gandhi International Hindi University (MGIHU) recently welcomed 11 students from China and Croatia, who have come here to learn Hindi.

In 2007, Mahatma Gandhi International Hindi University designed a one-year course for international students. More than 300 students have studied Hindi language from the Bhasa Vidyapeeth of this university. This is the third batch of the course.

10 students are from China while one from Croatia. Bian Huiyuan, from Beijing Foreign Studies University, Beijing, said, "I would like to know about Indian culture. Without knowing Hindi, it would have been difficult. Therefore, I am studying Hindi here." Another student, Chen Ziyu, from XI'AN International Studies University, China, said, "Economic relations between both countries are improving so we need to know Hindi for better opportunities."

Valentina Bedi, who has come from Croatia to learn Marathi language, said, "I found the language very interesting." She has already studied German, Italian, Sanskrit and English. "I have visited many countries to understand their languages, literature and culture," she added. During the welcome ceremony, vice chancellor of Mahatma Gandhi International Hindi University said, "China and India are known for their ancient and great civilizations. These students will act as a goodwill bridge between the two countries," he added.

महाराष्ट्र टाइम्स
२६ जुले २०१२

चीनचे विद्यार्थी हिंदी विद्यापीठात

म. टा. प्रतिनिधी ■ वर्धा

महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात चीन आणि क्रोएशिया येथून हिंदीच्या अभ्यासासाठी ११ विद्यार्थी आले आहेत. त्यांचे स्वागत कुलगुरु विभूती नारायण राय यांच्या अध्यक्षतेखाली आयोजित एक कार्यक्रमात करण्यात आले. यावेळी प्र-कुलगुरु ए. अर्विन्दाक्षण, प्रा. उमाशंकर उपाध्याय, प्रा. विजय कोल आदी प्रामुख्याने उपस्थित होते. यावेळी राय म्हणाले, भारत आणि चीन हे दोन देश आर्थिकदृष्ट्या झपाट्याने विकसित होत आहेत.

चीनच्या विद्यार्थ्यांना उद्देशून ते म्हणाले, या देशात सभ्यता आणि भावी महाशक्तीच्या देशांना जोडण्याचे काम आपण कराल आणि हिंदी शिकून सांस्कृतिक दूत म्हणून काम कराल, अशी अपेक्षा त्यांनी यावेळी व्यक्त केली.

या विद्यापीठातून २००७ ला चीनची ११ जणांची एक बॅच यापूर्वीच गेली आहे. आता नवीन दहा विद्यार्थ्यांमध्ये चीनचे, क्रोएशियाचा १, थायलंडचा ३, श्रीलंका १, मॉरिशस१ असे विदेशी विद्यार्थ्यांचा समावेश आहे.